www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(An Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-1* *Issue-5* *December 2024*

असंगठित क्षेत्र एवं प्रवासः पटना नगर निगम का एक भौगोलिक अध्ययन

मनमोहन सिंह

शोधकर्ता, भूगोल विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

सारांश–

प्रवास एक भौगोलिक तथ्य जो प्रत्येक युग की मानवीय आवश्यकता रहा है। जिस स्थान पर जीवन कठोर होता है, उस स्थान को छोड़कर मानव ऐसे स्थान पर स्थानांतरण करता है, जहां जीवन तुलनात्मक दृष्टि से सुगम होता है। बिहार में जनसंख्या की तुलना में बेरोजगारी, निर्धनता, अशिक्षा उच्च स्तरीय है। बिहार देश के प्रत्येक राज्य को श्रम बल उपलब्ध करवाता है। इसका प्रमुख कारण बिहार की भौगोलिक परिदृश्य के अंतर्गत जल प्रबंधन की कमी के कारण बाढ़ और सुखार की समस्या, किसानों के छोटे जोत, जीवन निर्वाह कृषि, उद्योगों की कमी के कारण राज्य में गरीबी तथा बेरोजगारी बढी है। अनौपचारिक क्षेत्र में संलग्न कार्य बल शहरी बुनियादी ढांचे का रीड होता है परंतु अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों को अनेक चुनौतियों यथा अपर्याप्त आय, कम उत्पादकता, कार्य के विपरीत परिस्थितियां, लैंगिक असमानता असमान वेतन, बलातश्रम (बंधुआ मजदूरी एवं बाल मजदूरी कुशलता प्रमाण पत्र की अनुपलब्धता, नियोक्ता–कर्मचारी संबंधों में कमी, रोजगार की मौसमी प्रवृत्ति आदि है। जिससे प्रवासी श्रमिकों के मूल अधिकारों में व्यापक हनन होता है। कोविड–19 महामारी के कारण लंबे समय से लॉकडाउन लगने के कारण मंदी एवं आर्थिक चुनौतियों के कारण जिसका सबसे ज्यादा प्रभाव इन प्रवासी श्रमिकों पर पड़ा। वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों की समस्याएं तथा चुनौतियों की पहचान कर उसके समाधान हेतु सुझाव समर्पित करना। वर्तमान अध्यक्ष प्राथमिक तथा द्वितीय का आंकड़ों पर आधारित है।

मूल शब्द– असंगठित क्षेत्र, श्रम बल, बेरोजगारी ,गरीबी, प्रवास, कोविड–19।

परिचय–

देश में कुल श्रम बल का 90 प्रतिशत असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत हैं। असंगठित कार्य बल शहरी बुनियादी ढांचे का रीड होता है। इसमें मुख्य रूप से ठेका श्रमिक, रेहड़ी–पटरी, श्रमिक घरेलू कामगार, पेशेवर श्रमिक, महिला, बाल श्रमिक, बंधुआ मजदूर, सीमांत कृषक, बटाईदार, कृषि कामगार आदि आते हैं प्रवास को प्रभावित करने वाले अन्य कारक असमान विकास है। बिहार आर्थिक रूप से पिछड़ा राज्य यहां गरीबी तथा बेरोजगारी अन्य राज्यों की तुलना में उच्च है। देश के अन्य भागों के साथ–साथ पटना की ओर भारी संख्या में प्रवास होता है। पटना तथा इसके सीमावर्ती जिला के ग्रामीण क्षेत्रों (दियारा क्षेत्र, ताल भूमि) से भी भारी संख्या में दैनिक प्रवास होता है। बिहार की राजधानी पटना अन्य जिला की तुलना में अधिक विकसित है। सबसे ज्यादा नगरीकरण, सबसे ज्यादा जनसंख्या संकेंद्रण के साथ–साथ यह जिला सबसे ज्यादा प्रति व्यक्ति आय अर्जित करने वाला है। covid–19 के समय उत्पन्न संकट के कारण असंगठित क्षेत्र में कार्यबल के लिए एक समावेशी पारिस्थितिकी तंत्र बनाने बनाए रखने में विफल रहे। असंगठित क्षेत्र में सलंग्न प्रवासी श्रमिकों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। इस दरमियान रिवर्स माइग्रेशन देखने को मिला। कोविड–19 महामारी इस दिशा में नये सिरे से हमें सोचने को विवश किया है।

अध्ययन क्षेत्र– अध्ययन क्षेत्र भारत में बिहार की राजधानी पटना में पटना नगर निगम की है, जो $25^0 30' N$

से 26^{0}45′N अक्षांश और देशांतर के बीच स्थित है। 85^{0}0′ पूर्व से 85^{0}16′ पूर्व. पटना नगर निगम में पहले में 72 वार्ड था जो अब टूट कर 75 वार्ड में हो गया है। 2011 की जनगणना के अनुसार इसकी आबादी 1.7 मिलियन है तथा क्षेत्रफल 109 वर्ग किलोमीटर है। भारत का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक शहर है। गंगा के मध्यवर्ती मैदानी भाग में गंगा के प्राकृतिक तटबंध के सहारे अवस्थित है।

पटना शहर गंगा के दक्षिणी किनारे पर गंगा, गंडक तथा पूर्व में सोन नदी के संगम पर बसा है। (Ghosh,1919) पुनपुन नदी गंगा के समानांतर बहती हुई 12 किलोमीटर पूर्व फतुवा में जाकर गंगा में मिल जाती है ।उत्तर–दक्षिण में नदियों की अवस्थिति पटना शहर की उत्तर–दक्षिण विस्तार को अवरुद्ध किया है, परिणाम स्वरूप पटना शहर का विस्तार गंगा के दक्षिणी प्राकृतिक तटबंध के सहारे पूरब–पश्चिम में रैखिक रूप से हुआ है। पटना का पूर्वी–पश्चिमी विस्तार 35 किलोमीटर तथा उत्तर दक्षिण विस्तार 16 से 18 किलोमीटर है। बहुत पहले जहां पटना शहर का न्यू राजधानी क्षेत्र है, वहां सोन नदी बहती थी। इस प्रकार सोन नदी का पश्चिम की ओर खिसकने के कारण पटना के पश्चिमी विस्तार को एक नया अवसर मिला है। सोन नदी पूर्व में पटना में गंगा से मिलती थी। पटना का सरपेंटाइन नहर सोन नदी का पूर्व का मार्ग था। (Patna Master plan,1962) पटना शहर सोन के परित्यक्त मार्ग पर बसा है। (Ahmed,1965) पटना का रेखिक आकृति मुख्य रूप से गंगा के प्राकृतिक तटबंध के प्रभाव के कारण आया है। प्राकृतिक तटबंध के सहारे कटाव और बाढ़ की सुरक्षा के लिए ईट की दीवार का निर्माण किया गया। (Sinh,1980) गंगा का दक्षिण का स्थाई किनारा शहर के विकास को स्थायित्व प्रदान किया है। दक्षिण का भाग सोनू और पुनपुन के नदी के खिसकने के कारण बना है, क्योंकि उत्तर में दक्षिण गंगा के किनारे के सहारे इसकी सहायक नदियां दक्षिण की ओर समानांतर चलती है।

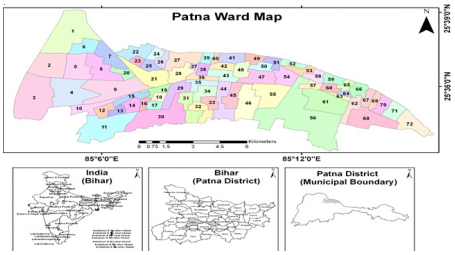

चित्र– 1 अध्ययन क्षेत्र का मानचित्र

विधि तंत्र– प्रस्तुत अध्ययन में मात्रात्मक एवं गुणात्मक आंकड़ों का संग्रहण, प्रतिदर्श चयन तथा साक्षात्कार के द्वारा किया जाएगा। प्राथमिक आंकड़ों का संग्रहण, क्षेत्र अवलोकन, यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन तथा साक्षात्कार के द्वारा किया जाएगा। द्वितीय आंकड़ों का चयन सरकारी विभागों, मान्यता प्राप्त गैर सरकारी संस्थाओं, संबंधित मानक पुस्तकों तथा शोध–पत्रों, साहित्य द्वारा प्राप्त किया जाएगा। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर आवश्यकतानुसार आंकड़ों का वर्गीकरण, सारणीकरण, मानचित्रों, रेखाचित्रों तथा विभिन्न सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जाएगा।अध्ययन क्षेत्र में सर्वेक्षण हेतु असंगठित क्षेत्र में कार्यरत 60 प्रवासियों का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया।

लक्ष्य एवं उद्देश्य– 1. अध्ययन क्षेत्र में असंगठित क्षेत्रों में संलग्न श्रमिकों की वर्तमान परिदृश्य का विश्लेषण करना। 2. असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत प्रवासी श्रमिकों की समस्याओं तथा चुनौतियों की पहचान करना। 3. असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत प्रवासी श्रमिकों की समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव समर्पित करना।

अध्ययन क्षेत्र में प्रवास के कारण–

1. नगरीकरण–

यह शहर नगरीकरण के रूप में दक्षिण एवं पश्चिमी दिशा में विस्तारित हुआ है। पटना शहर का विस्तार वर्ष 2001 से 2011 के दौरान हुई 17.38 प्रतिशत जनसंख्या वृद्धि के साथ तीव्र गति से विस्तारित हुआ है। प्रारम्भ में शहरीकरण शहर के केन्द्र से पश्चिम में था, लेकिन बाईपास निर्माण से आवासीय भूखण्ड़ों का निर्माण से शहर का विस्तार दक्षिण की ओर होने लगा है। शहर के पश्चिमी भाग में कुल भूमि का 34 प्रतिशत क्षेत्र है, जिस पर कुल जनसंख्या का 17.8 प्रतिशत भाग निवास करता है। शहर की जनगणना में जनसंख्या घनत्व से स्पष्ट होता है कि शहरी परिधि भागों में जनघनत्व में वृद्धि हो रही है। लेकिन कुछ वार्डो में जनघनत्व में कमी भी दर्ज की गई है, कुछ वार्ड ऐसे है,जहाँ जनघनत्व हमेशा ही अधिक ही बना रहा है। इसमें बांकीपुर अंचल, शहर का वाणिज्यिक क्षेत्र मुख्य है। शहर में व्यवसायीकरण मुख्य रूप से शहरी सड़कों के आसपास तीव्र गति से हुआ

है। इस प्रकार शहर का केन्द्रिय भाग अधिक घनत्व के कारण विकास का अन्तिम रूप ले चुका है। यहाँ अब और विकास की सम्भावना नहीं है। अतः शहर के बाहरी हिस्सों में ही जनसंख्या का संकेन्द्रण बढ़ता जा रहा है। इन संकेन्द्रण बढ़ता जा रहा है। इन संकेन्द्रण भागों में व्यापारिक गतिविधियों का भी तीव्र विकास हो रहा है। आर्थिक एवं जनांकिकी की वृद्धि की प्रक्रिया का परिणाम नगरीकरण है। नगरीय जनसंख्या में वृद्धि रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा आर्थिक क्रियाकलाप हेतु प्रवास के कारण नगरीय क्षेत्रों पर दबाव महसूस किया जा रहा है। बढ़ते जनसकेन्दण के कारण नगरीय सेवाएं जलापूर्ति, सैनिटेशन, सीवेज, यातायात आदि पर अत्याधिक दबाव पढ़ रहा है, परिणाम स्वरूप नगरीय क्षेत्रों में सलम बस्तियां निर्मित होती जा रही है ,इसलिए शहरी विकास विभाग बड़ी चुनौतियां का सामना कर रहा है। बढ़ती नगरीय आबादी के अनुरूप सैनिटेशन, सीवेज, जलापूर्ति, यातायात, आधारभूत ढांचा आदि विकसित नहीं हुआ है। भारत की जनसंख्या 2011 अनुसार बिहार के नगरीकरण 11.3% है जो राष्ट्रीय औसत 31.2% की तुलना में कम है, लेकिन बिहार में देश में कुल नगरीय जनसंख्य का मात्र 8. 6% आबादी है जो देश की कुल नगरीय जनसंख्या का 3.1% है। इसमें मुख्य रूप से मुरादपुर, दरियापुर, सब्जिबाग, के आसपास नगरीकरण तीव्र हुआ है। साथ ही राजेन्द्र नगर, बहादुरपुर, कंकड़बाग, लोहियानगर आदि आवासीय क्षेत्रों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि हुई है। पटना शहर के भौतिक व बुनियादी ढाँचागत विकास में बढ़ती आबादी, यातायात तथा ठोस कचरा प्रबंधन पर भीड़–भाड़ बड़ी समस्या बना हुआ है।

सारणी–1 अन्य जिला की तुलना में उच्च नगरीकरण

जिला	नगरीय जनसंख्या(%)
पटना	44.3
मुंगेर	28.3
नालंदा	26.3
रोहतास	21.0
भागलपुर	20.4

2. प्रति व्यक्ति सर्वाधिक आय–

अध्ययन क्षेत्र में प्रति व्यक्ति आय राज्य में सर्वाधिक है। राज्य के प्रमुख औद्योगिक, व्यवसायिक, प्रशासनिक ,न्यायिक, राजनीतिक ,शैक्षिक एवं चिकित्सीय केंद्र होने के कारण तमाम आर्थिक क्रियाकलाप यहां संपन्न होते हैं। अध्ययन क्षेत्र की समृद्धि व सुविधाएं राज्य के उन क्षेत्रों के लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है।

सारणी–2 आर्थिक सर्वेक्षण 2019–20 के अनुसार प्रति व्यक्ति सर्वाधिक आय

जिला	प्रति व्यक्ति सकल जिला घरेलू उत्पाद
पटना	112604
बेगूसराय	45540
मुंगेर	37385

स्रोत– बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2020–21

3. पटना बिहार की राजधानी होने के कारण सबसे विकसित जिला–

पटना नगर निगम रोजगार के क्षेत्र परिवहन, भण्डारण ,संचार विनिर्माण, व्यापार, होटल और रेस्तरा, लोक प्रशासन, वित्त, स्वास्थ्य, शिक्षा और व्यवसाय का मुख्य केन्द्र है। (Krismumurthya et al, 2012) पटना शहर के बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठानों में श्री लक्ष्मी कोल्ड स्टोरेज लिमिटेड, प्रदीप लैप वर्क्स, श्री वैद्यनाथ आयुर्वेदिक भवन लिमिटेड, अंबुजा इलेक्ट्रोकास्टिंग लिमिटेड, बाटा इंडिया लिमिटेड, मोदी स्टील्स लिमिटेड आदि शामिल है। नगर निगम क्षेत्र में बड़े व्यापारिक क्वार्टर मरूफगंज, मसूरंगंज, मिर्चियागंज, आदि है। बिहार राज्य इलेक्ट्रॉनिक्स विकास निगम लिमिटेड ने कुछ साल पूर्व पटना में बिहार राज्य का पहला सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क विकसित

किया है। पटना में बाईपास रोड़ के किनारे कई ईट भट्टे भी है। अधिकांश बड़े, मध्यम और लघु घरेलु उद्योग पटना सिटी सर्कल (पुराना पटना शहर क्षेत्र) में स्थित है। पाटलिपुत्र में बिहार औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकरण (BIADA)) की औद्योगिक इकाईयां 104.14 एकड़ में क्षेत्र में स्थापित की गई जिसमें 139 उद्योग शामिल है। वार्ड संख्या 69 में बायपास रोड़ की ओर बड़ा औद्योगिक विस्तार हो रहा है। अध्ययन क्षेत्र शिक्षा और चिकित्सा के हब के रूप में विकसित हो रहा है परिणाम स्वरूप प्रवास में अपने आप उनका निभाना रहा है। अपार्टमेंट, गर्ल्स/बॉयज हॉस्टल, रेस्टोरेंट, होटल ,हॉस्पिटल, कोचिंग संस्थान, स्कूल, कॉलेज, प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले कोचिंग संस्थान, मेडिकल, इंजीनियरिंग, प्रबंधन, की तैयारी करने वाले कोचिंग संस्थान, बहुत तेजी से विकसित हो रहे हैं। परिणाम स्वरूप असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के लिए अध्ययन क्षेत्र पसंदीदा जगह बन गया है।

4. सुलभ संपर्कता– पटना अपने पड़ोसी क्षेत्रों से विभिन्न प्रकार के यातायात साधन से जुड़ा हुआ है, पटना जंक्शन पूर्व मध्य रेलवे का महत्वपूर्ण रेलवे स्टेशन जहां से गया, रांची, जमशेदपुर, मुजफ्फरपुर इत्यादि रेलवे स्टेशनों से जुड़ा हुआ। दक्षिण में पटना– गया रेलवे लाइन पूर्व मध्य रेलवे का ग्रांड कार्ड रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है ,जो झारखंड के औद्योगिक क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। ब्रॉड गेज रेलवे का मुख्य मार्ग हावड़ा–दिल्ली मार्ग पूर्व मध्य रेलवे के अंतर्गत गंगा के तट पर दक्षिणी शहर के दक्षिण में चलती है। पटना जंक्शन, के अलावा पटना साहिब, पाटलिपुत्र बड़ा रेलवे स्टेशन है। पाटलिपुत्र रेलवे स्टेशन उत्तर बिहार से आने वाली ट्रेनों को अपनी सेवाएं देता है। पटना छभ–30 पर बसा है। जो बिहार में मोहनिया से बख्तियारपुर तक जाता है, जो दिल्ली– आसाम को जोड़ता है जो भाया NH–2 दिल्ली –कोलकाता और NH–31, गंगा नदी पर महात्मा गांधी सेतु पटना से उत्तर बिहार को जोड़ता है। वही दीघा––सोनपुर रेल–सह–सड़क पुल जो कच्ची दरगाह बिदुपुर छह लेन सड़क मार्ग से जुड़ गया है। उत्तर बिहार के लोगों के लिए पटना में पहुंच सुलभ हो गई। पटना हवाई अड्डा पटना नगर निगम में स्थित है से रांची, कोलकाता, बेंगलुरु तथा लखनऊ को उड़ान भरा जाता है। अध्ययन क्षेत्र में यातायात के सुलभता लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है।

5. रोजगार के पर्याप्त अवसर– तीव्र नगरीकरण, किया हैजनसंख्या का उच्च संकेंद्रण, शैक्षणिक हब के रूप में विकसित होने को अग्रसर, चिकित्सा का प्रमुख केंद्र आदि साथ साथ प्रमुख व्यावसायिक और आर्थिक गतिविधियां असंगठित क्षेत्र के लोगों को अपनी ओर आकर्षित।

6. भौतिक सुख–सुविधाओं से युक्त– शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा के अतिरिक्त भौतिक सुख सुविधा आम जनों को अपनी तरफ खींचने में कोई कसर नहीं छोड़ा है। यह मानव स्वभाव है, की प्रतिकूल परिस्थितियों के विपरीत मानव अनुकूल परिस्थितियों में की ओर अग्रसर होता है।

अध्ययन क्षेत्र में असंगठित क्षेत्र में कार्यरत प्रवासी श्रमिकों की समस्याएं–

1. लैंगिक असमानता– कार्य करने के समान अवसर तथा समान वेतन के अभाव में सतत विकास लक्ष्य–5 के अंतर्गत निर्धारित किए गए लैंगिक समानता के उद्देश्य को पूरा करना कठिन प्रतीत हो रहा है। अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक आंकड़ों के आधार पर 78.33% पुरुष श्रमिक, वही 16.67% महिला श्रमिक तथा शेष बाल श्रमिक हैं।

चित्र– 2 साक्षात्कार के दौरान प्रवासी श्रमिक

2. रिवर्स माइग्रेशन– कोविड–19 महामारी के समय लबे समय तक लॉकडाउन के कारण असंगठित गतिविधियों में आई शिथिलता के कारण रिवर्स माइग्रेशन अर्थात शहरी क्षेत्रों से ग्रामीण क्षेत्रों की ओर प्रवास में

वृद्धि हुई।

चित्र– 3 कॉविड–19 के दौरान पटना जंक्शन पर रिवर्स माइग्रेशन का एक दृश्य

3. अनियमित रोजगार की उपलब्धता– अध्ययन क्षेत्र में असंगठित क्षेत्र में कार्यरत लोगों में 63.33% लोगों ने नियमित रोजगार उपलब्धता की बात की जबकि 36.67% लोगों ने नियमित नियमित रोजगार उपलब्धता की बात की। नियमित रोजगार की उपलब्धता की श्रेणी में कुशल कामगार श्रमिक थे जबकि अनियमित रोजगार की उपलब्धता की श्रेणी में अकुशल कामगार थे

चित्र 4 काम की प्रतीक्षा में राजीव नगर लेबर चौक पर प्रवासी श्रमिकों का जमावड़ा एवं ग्रामीण क्षेत्रों से अध्ययन क्षेत्र में दैनिक प्रवास

4. कार्यस्थल पर विपरीत परिस्थितियां– अध्ययन क्षेत्र में बिना सुरक्षा उपकरण के निर्माण कार्य में संलग्न थे। क्षेत्र में कार्य की अनुपलब्धता के कारण बहुत से प्रवासी श्रमिक शहरों में कुड़ा बीनने का काम करने लगे। कचरों के ढेर पर बिना मास्क,जूता या ग्लव्स के इन्हें कूड़ा बीनते देखा गया है।

5. कार्यस्थल पर शोषण/विपरीत परिस्थिति में कार्य करने को विवश– अध्ययन क्षेत्र में असंगठित प्रवासी श्रमिकों में प्रशासन द्वारा प्रतिकूल व्यवहार 20%, नही,तथा 36.66%, कार्यस्थल पर शोषण/मारपीट–43. 3% जैसी घटनाओं का जिक्र किया है। स्पष्ट है कि असंगठित क्षेत्र होने के कारण उनकी सुरक्षा व संरक्षा की कमी महसूस की गई है। पुलिस प्रशासन भी उन्हे संदेह की दृष्टि से देखता है।

6. नियोक्ता एवं कर्मचारी के संबंधों में कमी– अध्ययन क्षेत्र में असंगठित प्रवासियों में नियोक्ता एवं कर्मचारियों के संबंध के विषय में मजबूत संबंध का अभाव देखा गया है। काम करने के दौरान अगर वे दुर्घटनाग्रस्त हो जाते हैं तो नियोक्ता अपनी जिम्मेवारियों को नहीं निभाता है और अपना पल्ला झाड़ लेता है। 68.3% असंगठित श्रमिकों ने बताया कि विपरीत परिस्थिति में असहाय छोड़ दिया गया। जबकि 31.6% लोगो बताया कि कुछ मदद कर देते हैं।

7. बाल श्रम एवं बालात श्रम– सर्वेक्षण के दौरान साक्षात्कार के क्रम में यह स्पष्ट हुई की गरीबी के कारण अधिकांश अभिभावक अपने छोटे बच्चों को शहरों में अपार्टमेंट में नौकर, ईट भट्टा, हॉस्टलों, कचरा चुनने, भीख मांगना आदि काम करने के लिए भेजते हैं।

चित्र– 5 अध्ययन क्षेत्र के पटना सिटी अंचल में ईट भट्ठा पर काम करते बाल मजदूर

इसके काम के बदले में उन्हें अग्रिम में पैसे मिल जाते हैं। यह बच्चे अपार्टमेंट के अंदर, ईट भट्ठों में लगभग बलात श्रम के शिकार हो जाते हैं। माता–पिता की मजबूरी के कारण इन्हें बाल श्रम के दलदल में झोंक दिया जाता है। इनका बचपन बुरी तरह नष्ट हो जाता है। इस में लड़कियां तथा छोटे बच्चे भी शामिल हैं। अक्सर इन बच्चों के साथ मारपीट भी की जाती है। कई बार मानसिक तथा शारीरिक शोषण भी होता है। असंगठित क्षेत्र होने के कारण कानून और प्रशासन की पहुंच से यह दूर हो जाते हैं।

8. प्रवासियों के सटीक आंकड़ों की कमी– असंगठित क्षेत्र होने के कारण इनका संघ ,संगठन व संस्थान की कमी के कारण इनके सही–सही आंकड़े नहीं मिल पाते हैं। अध्ययन के क्षेत्र में यह बहुत बड़ी बाधा महसूस की गई है।

9. अध्ययन क्षेत्र में तीव्र जनसंख्या संकेंद्रण के कारण उत्पन्न समस्याएं– रहने के लिए स्वच्छत वातावरण की अनुपलब्धता, एक एक कमरे में 5–7 लोग एक साथ रहते हैं, रोशनदान हवादार कमरे की अनुपलब्धता, शौचालय की अच्छी स्थिति नहीं, मोहल्लों में कचरों के जमाव के कारण होने की अस्वस्थ होने की आशंका, आदि। रेहड़ी–पटरी वालों के कारण सड़कों पर जाम की समस्या, नगरीय क्षेत्रों में प्रवासियों के आगमन के कारण संसाधनों और आधारभूत संरचना पर दबाव बढ़ा है, जिससे वहां के भौतिक आधारभूत संरचना आवास, परिवहन, संचार, विद्युत, ठोस कचरा उत्पन्न होने की मात्रा तथा सामाजिक आधारभूत संरचना यथा शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, खाद्य सुरक्षा, पेयजल आदि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। शहरी वातावरण में लूटमार, चोरी–डकैती, हत्या, बलात्कार, फिरौती अपहरण आदि की घटनाएं देखने को मिल रहे हैं।

10. श्रम एवं पूंजी का स्थानांतरण उच्च मूल्य वर्धित क्षेत्रों की ओर देखा गया है, फल स्वरुप श्रम का अधिकांश भाग निम्न गुणवत्ता युक्त रोजगार गतिविधि में कार्य करने को विवश है।

11. सूचना एवं प्रौद्योगिकी आधारित सेवाओं का तीव्र प्रसार के कारण इसने रोजगार प्राप्ति हेतु उच्च कौशल की आवश्यकता है, अधिकांश कार्य बल इस क्षेत्र में कार्य करने हेतु आवश्यक कौशल से वंचित हैं।

12. गरीबी एवं बेरोजगारी– सीएमआईई (सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनामी) के अनुसार जून–2022 में देश में बेरोजगारी दर 7.8% हो गई। इस दौरान 1.3 करोड़ लोग बेरोजगार हुए जिसमें शहरी बेरोज़गारी 8.2 1% से घटकर 7.30% रहा। बिहार में बेरोजगारी दर 14% रही। वही नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार बिहार देश का सबसे निर्धन राज्यों की सूची में प्रथम स्थान पर है, जहां 51.91% आबादी गरीब है। वहीं भारत में गरीबी दर 25.1% है।

13. फुटपाथ पर जीवन गुजर बसर करने को विवश– अध्ययन क्षेत्र में प्रवासी को श्रमिकों की स्थिति अच्छी नहीं है। वे अपने जीवनवसर खुले आसमान के नीचे फुटपाथ पर करते हैं। फुटपाथ पर खाना बनाना, सामुदायिक शौचालय का उपयोग करना, होटल में पानी पीना तथा फुटपाथ पर ही सो जाना इनकी दैनिक क्रियाकलाप है।

चित्र– 6 अध्ययन क्षेत्र में फुटपाथ पर जीवन बसर करते प्रवासी श्रमिक

अध्ययन क्षेत्र में सर्वेक्षण संबंधी आंकड़े– अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2022 सर्वेक्षण के दौरान प्रवासी श्रमिकों में 13. 33% 14 वर्ष के नीचे के मिले, वही 15 से 30 वर्ष के उम्र वालों 53. 33% थे। 30 से 45 वर्ष में 28.33% लोग, शेष 45 वर्ष से ऊपर के थे। जाति में मुख्य रूप से अनुसूचित जाति एवं अत्यंत पिछड़ा वर्ग मिलाकर इनकी संख्या लगभग 68% से अधिक थी। समाज के सबसे निचले तबके के साथ साथ मध्यम वर्गों में प्रवास अधिक देखने को मिला। मासिक आय के अंतर्गत 30% लोगों ने 5000 रुपए से कम आय की। 40% प्रवासि श्रमिको की आय है, 5000 से 10000 रुपए के बीच थी। प्रवासी श्रमिकों में 20% लोगों ने 8 घंटे से ज्यादा काम करने की बात कही। 66.67% लोगों ने कम मजदूरी मिलने की बात कही। 75% लोगों ने प्रवासी श्रमिकों के संदर्भ में सरकारी योजनाओं की जानकारी नहीं होने की बात की। 70% प्रवासी श्रमिकों ने आवास स्थल पर गंदे शौचालय की बात की। 25% प्रवासी श्रमिकों ने अध्ययन क्षेत्र में फुटपाथ, चौक चौराहों, सरकारी भवनों, मंदिरों में रहने की बात की, वही 41.66% लोगों ने रहने के लिए हवादार एवं रोशनदान कमरों की अनुपलब्धता की बात की। कोविड–19 के समय अध्ययन क्षेत्र में 66.67% लोगों ने अपने घर को वापस लौट गए, 13% लोगों ने कर्जा लेकर अपना जीवन हो बसर किया वही 20% लोगों ने सरकारी सेवा की मिलने की बात की। अध्ययन क्षेत्र में 35% पेशेवरों श्रमिक, निर्माण कार्य में लगे श्रमिक, 25% वही सेवा क्षेत्र में श्रमिक 40% थे। अध्ययन क्षेत्र में पटना जिला के समीपवर्ती क्षेत्र से 40% प्रवासी मासिक प्रवासी है, बिहार से 26% प्रवासी दक्षिण बिहार से 20% परवा से तथा पटना जिला के ग्रामीण क्षेत्र से 13.33 प्रतिशत प्रवास है इनका प्रवास दैनिक। संगठित क्षेत्र में कार्य प्रवासियों में 71.66% प्रवासी अकेला प्रवास किए हैं, वही 28.33% परिवार प्रवास किए हैं। ये वे लोग हैं जो प्राय भूमिहीन है। पूरे परिवार के साथ शहर में प्रवास के हैं। पुरुष वर्ग मजदूरी करता है तो महिलाएं घरेलू कामगार है इनका प्रवास वार्षिक है। प्रवासी श्रमिकों ने अपने इस स्थित में बेहतरी के लिए नियमित काम, अपने इलाके में काम एवं उचित मजदूरी का सुझाव दिया।

सुझाव–

1. उपनगरीय क्षेत्रों का विकास– पटना नगर निगम में प्रवास संबंधित समस्या के समाधान के लिए विकेंद्रीकृत क्षेत्रों में विकास की आवश्यकता महसूस की जा रही है अर्थात इसके उपनगरीय क्षेत्रों में विकास किया जाना चाहिए।

2. बिहार में बाढ़ एवं सूखा पर नियंत्रण हेतु जल प्रबंधन पर फोकस बिहार में बाढ़ एवं सूखा के अतिरिक्त मॉनसून की देरी के कारण कृषि के क्षेत्र से उत्पन्न प्रछन्द बेरोजगारी से प्रवास को बढ़ावा मिलता है।

3. राज्य में रोजगार के बढ़ावा हेतु पहली प्राथमिकता उद्योग एवं व्यवसाय की स्थापना– राज्य में इथेनॉल के उत्पादन, खाद्य प्रसंस्करण संबंधी उद्योग नवीकरणीय ऊर्जा संबंधी उद्योग की बहुत ही संभावनाएं है।

विभिन्न मद	आवंटित रुपए (करोड़ में)
शिक्षा	39191.87
स्वास्थ्य	16134.39
उद्योग एवं उद्योग में निवेश	1643.74
कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र	7712.30
आधारभूत संरचना (ग्रामीण एवं शहरी)	29749.64
कल्याण	29749.64

बिहार में विभिन्न मद में कटौती करके तथा अनावश्यक व्यय पर नियंत्रण के साथ प्राथमिकता के आधार पर व्यय को निर्धारित करते हुए पूरा का पूरा ध्यान उद्योग धंधों तथा इससे संबंधित आधारभूत ढांचा के विकास पर देना चाहिए।

4. अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों का डाटा बैंक का निर्माण सामाजिक सुरक्षा योजना लागू करने में एक अहम समस्या इनके निश्चित संख्या की जानकारी न होना है। असंगठित क्षेत्र में कार्यरत प्रवासी श्रमिकों का डाटा बैंक किसी भी योजना निर्माण के लिए परम आवश्यक है।

5. माइग्रेशन हेल्प सेंटर की स्थापना– नगरों में प्रवासी मजदूरों को मदद करने के माइग्रेशन हेल्प सेंटर खोला जाना चाहिए। प्रवासी मजदूरों की समस्याएं कौशल क्षमता के हिसाब से बेहतर काम और मानदेय मिले। विभिन्न एजेंसियों, औद्योगिक क्षेत्रों, असंगठित क्षेत्रों को भी इसमें भागीदार बनाना चाहिए। डेटाबेस तैयार करने का उद्देश्य प्रवासी मजदूरों को योग्यता और क्षमता के अनुसार रोजगार दिलाने में मदद मिलेगी।

6. छोटे पेशेवरों को दक्षता एवं प्रशिक्षण प्रमाण पत्र देने की आवश्यकता–छोटे पेशेवरों को दक्षता प्रमाण पत्र देकर उसके हुनर को मान्यता दिया जा सकता है। इसके निम्न लाभ हो सकते हैं।

–छोटे पेशेवरों को दूसरे राज्यों में काम पाने में मदद मिलेगी।

–उनके काम का सही मेहनताना आना मिलेगा।

–काम का अवसर तलाशने में परेशानी नहीं होगी।

–उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी साथ ही राज्य के विकास में सहयोग करेंगे।

–छोटे पेशेवरों के अंतर्गत राजमिस्त्री, मूर्तिकार, पेंटर, कास्ट कला, ब्यूटीशियन, टेक्नीशियन, हलवाई आदि है।

7. सरकारी योजनाओं के संबंध में जागरूकता।

8. शहरी रोजगार गारंटी योजना को धरातल पर लाने की जरूरत।

9. प्रवासी श्रमिकों के बच्चों के शिक्षा के लिए विशेष प्रबंध।

10. शहरी प्रवासी वेंडरों को बैंकों से संबंध होना चाहिए।

11. उधम के नए अवसर को प्रोत्साहित करना।

12. सामाजिक सुरक्षा के उपायों को मजबूत करना।

11. बिहार में मॉडल गांव की संकल्पना को विकसित करने की आवश्यकता है।

12. जनसंख्या नियंत्रण की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

13. बिहार में आय के नए स्रोत पर कार्य करने की आवश्यकता है।

14. बजट का निर्माण राज्य के भविष्य को देखते हुए किया जाना चाहिए न की राजनीतिक भविष्य। सरकार को लोकलुभावन तथा नगद स्थानांतरण जैसे योजनाओं पर पुनर्विचार करने की जरूरत है तथा बिहार में रोजगार तथा उद्योग की स्थापना सरकार की पहली प्राथमिकता में होनी चाहिए, जिससे काफी हद तक प्रवास पर नियंत्रण लगाया जा सकता है।

निष्कर्ष–

अध्ययन क्षेत्र में असंगठित प्रवासी श्रमिकों की स्थिति अच्छी नहीं है इनके जीवन स्तर व आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों के लिए एक निश्चित अवधि तक गारंटी युक्त कार्य करने के अवसर उपलब्ध कराकर लोगों की आय में वृद्धि की जा सकती है। शहरी रोजगार गारंटी योजना को लागू किए जाने से शहरी निवासियों के कार्य का वैधानिक अधिकार प्राप्त होगा।

संदर्भ सूची–

1. Ahmed, E, (1965)- Bihar, physical, Economic and Regional Geography- Ranchi University press, Ranchi, 335
2. Bihar economics survey&2020&21, 2021&2022
3. Ghosh, M, (1919)- Patliputra, Patna law press, Patna.
4. Ghosh, D sarkar (2014) & Rular&Urban migration and conflict in the City, Bihar
5. Krishnamurthya.
6. Master Plan, Patna, (1962), Patna Improvement Trust.
7. Periodic Labour Force Survey (2022) &Ministry of statistics and program implementation] National statical office, Government of India.
8. Sinha, M. M. P, (1980)- The impact of urbanization on land use in the rural&urban fringe: a case study of Patna, Concept Publishing Company.

9. https://unemploymentinindia.cmie.com, date of accession 30.7.2022
10. https://niti.gov.in, date of accession-30.07.2022
11. https://pib.gov.in date of accession -30.07.2022
12. https://bihar loksamvad.net.date of accession-19.8.2022
13. https://state.bihar.gov.in-labour date of accession -9 10.22

Cite this Article-

मनमोहन सिंह, "असंगठित क्षेत्र एवं प्रवासः पटना नगर निगम का एक भौगोलिक अध्ययन", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:05, December 2024.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2024v1i5005

Published Date- 07 December 2024